

Prof. Pankaj Kr. Gupta
 Assistant Professor (Economics)
 R.B.G.R. College, Maharajganj

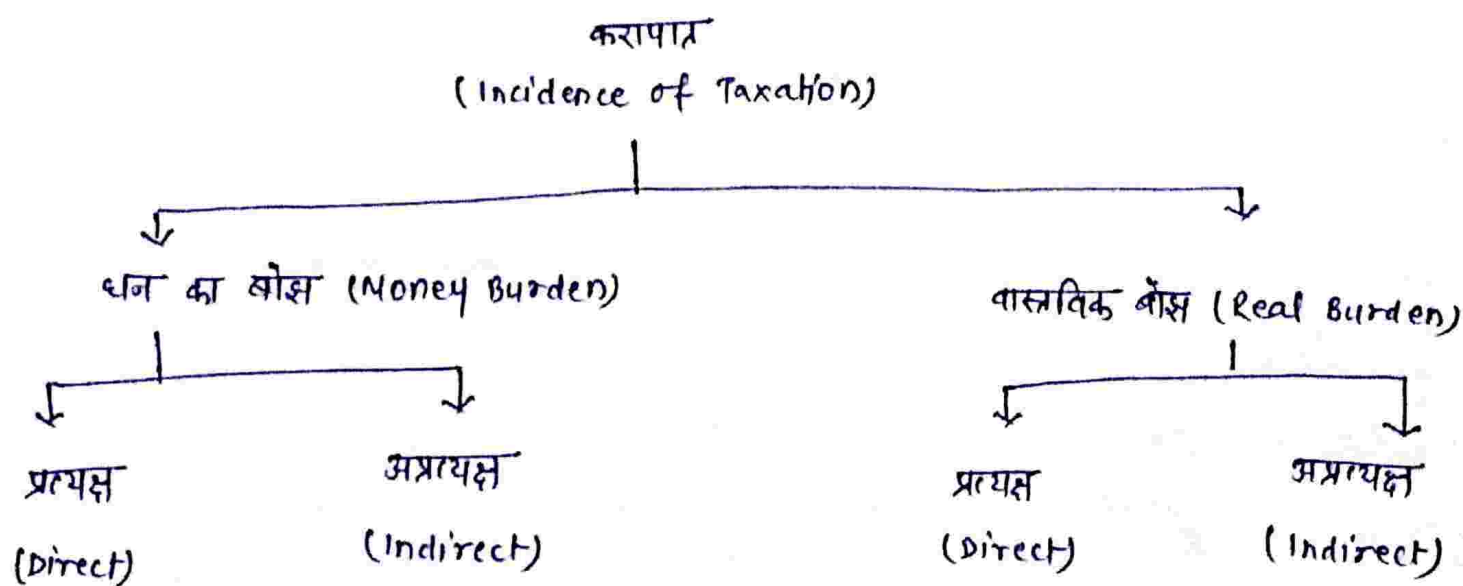
TDC-II Economics (Hons.)
Paper IV - Public Finance
Module 3: - Taxation

Topic: - Incidence and Impact of Taxation System

करभार तथा करापात कर प्रणाली

करापात का अर्थ (Meaning of Incidence)

करापात से अभिप्राय व्यक्ति पर पड़ने वाला अंतिम कर का बोझ है। जब भी कर का अंतिम बोझ किसी करदाता पर अंतिम रूप से पड़ता है, तो उसे करापात (Incidence of tax) कहते हैं। परन्तु, प्रश्न यह उठता है कि वास्तव में कर का बोझ किस व्यक्ति पर पड़ा। इसे समझने से पहले विभिन्न लोगों पर पड़ने वाले करापात का वर्गीकरण को समझना होगा।



प्रत्यक्ष कर से अभिप्राय है वह कर बोझ जो धन के रूप में किसी व्यक्ति पर लगाया जाता है। इसका अर्थ है जो व्यक्ति/संस्था कर का भुगतान करता है वह कर का बोझ भी सहन करता है।

यहाँ करापात (Incidence of tax) का अर्थ स्थानान्तरण / विवर्तन (Transfer/shifting) भी है। यदि कर का स्थानान्तरण हो जाए तो करापात उस व्यक्ति पर नहीं पड़ता जो स्थानान्तरण / विवर्तन करता है। मान लीजिए सरकार चीनी पर कर लगाती है, कर का बोझ प्रत्यक्ष रूप से चीनी के उत्पादक पर पड़ता है। यदि वह उत्पादक किसी दूसरे पर कर का विवर्तन (shifting) कर देता है तो इसका अर्थ है चीनी के भाव बढ़ जायेंगे। यदि विवर्तन की यह प्रक्रिया जारी रहती है तो करापात उस उपभोक्ता पर पड़ेगा जो अन्तिम दशा में धन बोझ (money burden) उठाएगा। इसे परोक्ष धन बोझ कहा जाता है।

इसी प्रकार, वास्तविक कर बोझ, वह वलिदान है जो करदाताओं को कर के रूप में देनी पड़ती है। इस प्रकार, कर का भुगतान करके करदाता आर्थिक कल्याण के क्षेत्र में अपना योगदान देता है। इसके विपरीत, परोक्ष वास्तविक बोझ से उपभोग में कमी आती है।

करापात का अर्थ (Impact of Taxation)

वह कर जो उस व्यक्ति पर पड़ता है जिससे सरकार कर एकत्र करती है अर्थात् जो सर्वप्रथम कर का भुगतान करता है। जिस व्यक्ति को कर तुरन्त भुगतान करना पड़ता है उस पर करापात होता है। जैसे - आयात कर (Import duty) सरकार को आयातकर्ता देगा, उत्पादन कर उस व्यक्ति को देना पड़ता है जो वस्तु का उत्पादन करता है।

प्रो० जे० क० मेहता के अनुसार, "करापात तुरन्त भुगतान है। जो व्यक्ति कर का भुगतान करता है वह करापात सहन करता है। रुपये के उत्पादक

पर कर लगाया जाना चाहिए। कपड़ा उत्पादक सरकार को कर देगा।
उत्पादक कपड़े की कीमत में हड़ि करता है ताकि कर का भार क्रैमा
पर पड़े। अगर वह कीमत बढ़ाने में सफल रहता है तो इसका अर्थ
है कि कर का तिवर्त (shift) हुआ है। यदि कीमत पूरी सीमा तक
नहीं बढ़ पायी तो इसका अर्थ है करायात का कुछ भाग कपड़ा
उत्पादक पर शेष रह गया है। लेकिन करायात केवल उत्पादक पर ही
पड़ेगा। सबसे पहले वही कर के बोझ को सहन करता है।

नोट: प्रो० फिण्डले गिराज ने माना है कि कर के प्रभाव में अन्तर कर
पाना कठिन है। दोनों व्यक्ति से विशेष रूप से समाज से आमतौर पर
सम्बन्धित है। इसलिए इन्हें अलग करके देखना ठीक नहीं।

करायात तथा करापात में अन्तर (Distinction between Impact & Incidence)

- (1) करायात किसी कर के प्रारंभिक भार को प्रकट करता है जबकि करापात अंतिम
भार को प्रकट करता है।
- (2) करायात का भार वह व्यक्ति अनुभव करता है जिससे सरकार कर
वसूलती है। इसके विपरीत, करापात का भार उस व्यक्ति द्वारा अनुभव
किया जाता है जो कि वास्तव में उस भार को सहन करता है।
- (3) करायात के भार को एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति पर तिवर्तित कर
सकता है। लेकिन करापात के भार को तिवर्तित करना संभव नहीं होता।
- (4) करायात को करदाता महसूस करते हैं जिनसे कर एकत्रित किया जाता
है और करापात को वह व्यक्ति महसूस करता है जो वास्तव में
कर के भार को सहन करता है।

The End
Pankaj